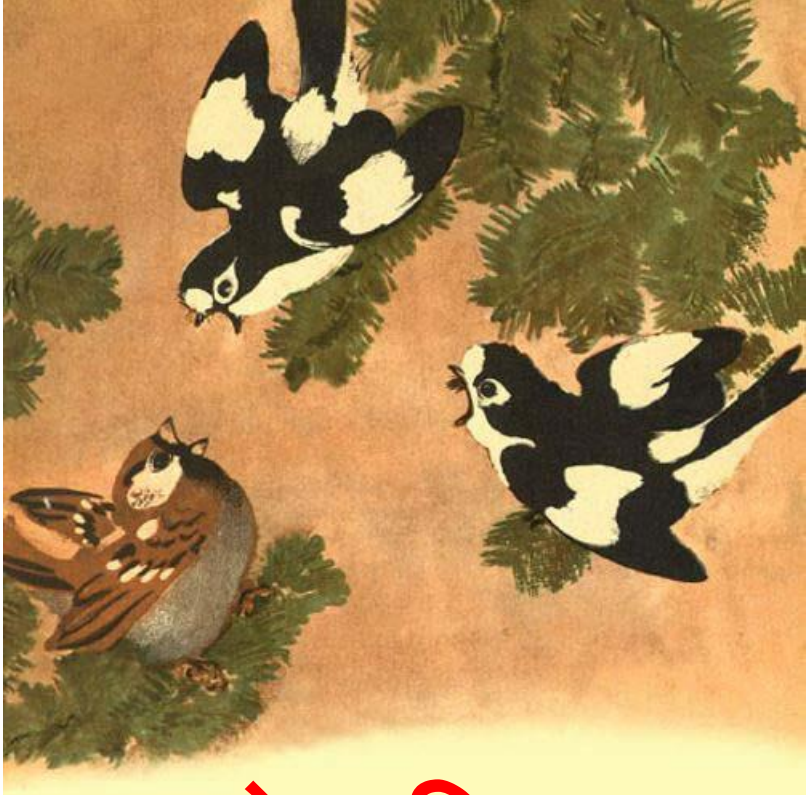

रेड हिल

विटाली बियांकी

चित्र: वाई. चारुशिन, हिंदी: अरविन्द गुप्ता

चिरप लाल सिर वाला एक युवा गौरैया था. जब वो एक साल का हुआ तो उसने चिरपी से शादी कर ली और फिर अपना घर बसाने का फैसला किया.

"लेकिन, प्रिय, हम अपना घोंसला कहां बनायें?" चिरपी ने गौरैया भाषा में पूछा. "सभी पेड़ों के खोखलों पर पहले ही पक्षियों ने कब्जा कर लिया गया है."

"यह बड़ी छोटी सी बात!" चिरप ने अहंकारपूर्वक, निश्चित रूप से, गौरैया भाषा में उत्तर दिया. "हम अपने पड़ोसियों को बाहर निकाल देंगे और उनका खोखला ले लेंगे."

चिरप को लड़ना पसंद था और उसने इस मौके का फायदा उठाते हुए चिरपी को दिखाया कि वो कितना बहादुर था. वो एक अन्य युवा गौरैया के कब्जे वाले खोखले स्थान की ओर उड़ा. चिरप ने खुद से कहा, "मैं खोखले में घुस जाऊंगा और चिल्लाना शुरू कर दूंगा कि पड़ोसी मेरे घर पर कब्जा करने की कोशिश कर रहा है."

चिरप ने अपना सिर छेद में डाला और तुरंत किसी ने उसकी नाक पर एक दर्दनाक चोंच मारी! वो वापस उछला. पीछे से घर का मालिक ही उस पर हमला कर रहा था. जोर-जोर से चिल्लाने के साथ-साथ वे आपस में हवा में टकराए, जमीन पर गिरे और खाई में लुढ़के. चिरप एक महान योद्धा था, और उसका प्रतिद्वंद्वी पहले से ही कमजोर था.

शोर के कारण पूरे बगीचे से बूढ़ी गौरइए वहां आ गईं. उन्हें सही-गलत बताने में देर नहीं लगी और उन्होंने चिरप को इतना पटका और मारा कि वो बमुश्किल अपनी जान बचाकर भाग पाया.

फिर वो झाड़ियों के एक झुरमुट में पहुंचा जहां वो पहले कभी नहीं गया था. उसके पूरे शरीर में दर्द हो रहा था. चिरपी बहुत डरी हुई लग रही थी. "चिरप प्रिय, अब हम कभी भी अपने बगीचे में वापस नहीं जा पाएंगे! अब हम अपने बच्चों को कहां पैदा करेंगे?"

चिरप अच्छी तरह से जानता था कि अब से उसे बूढ़ी गौरइयों की नजरों से दूर रहना होगा, नहीं तो वे उसे चोंच मार कर मार डालेंगी. फिर भी, वो नहीं चाहता था कि चिरपी यह देखे कि वो डरा हुआ था. इसलिए उसने अपनी पुरानी लापरवाह आदत के साथ कहा, "वो एक छोटी सी बात है! हम अपने लिए कोई और जगह ढूंढ लेंगे, जो इससे भी बेहतर होगी!" फिर वे रहने के लिए एक नई जगह की तलाश में निकल पड़े.

झाड़ियों के ठीक पीछे एक अच्छी, नीली नदी थी, और उसके विपरीत किनारे पर लाल मिट्टी और रेत से बनी एक बहुत ही खड़ी पहाड़ी थी. इस पहाड़ी की चोटी के पास बहुत सारे छोटे-छोटे छेद और बिल थे. वहां मैगपाई और विंडहॉवर पक्षी बड़े छिद्रों के सामने जोड़ों में बैठे थे, और अबाबील छोटे-छोटे छिद्रों से अंदर-बाहर उड़ रहे थे.

"देखो, वे कितना मज़ा कर रहे हैं," चिरपी ने इधर-उधर उड़ रहे अबाबीलों के झुंड की ओर इशारा करते हुए कहा. "चलो हम भी यहीं अपना घोंसला बनाएं." चिरप ने घबराहट से मैग्पीज़ और विंडहोवर्स की ओर देखा. "अबाबीलों के लिए वो सब ठीक है. लेकिन मैं क्या करूं? क्या मैं किसी और के घोंसले को हथियाने के लिए लड़ाई शुरू करूं?" इस विचार मात्र से ही उसे फिर से पीड़ा होने लगी.

"नहीं, मुझे यह जगह पसंद नहीं है," उसने कहा, और फिर वे उड़ गये. अब वे एक बगीचे के पास आये, वहां उन्होंने एक कुटिया और एक खलिहान देखा.

वे खलिहान की छत पर उतरे, और पहली बात जो चिरप ने देखी वह यह थी कि वहां कोई पक्षी नहीं थे. "यहां रहना ठीक रहेगा!" चिरप ने ख़ुशी से कहा. "ज़रा उन सभी बीजों और टुकड़ों को पूरे आंगन में बिखरे हुए देखो? हम यहां अकेले रहेंगे, और हम किसी और को अंदर आने नहीं देंगे."

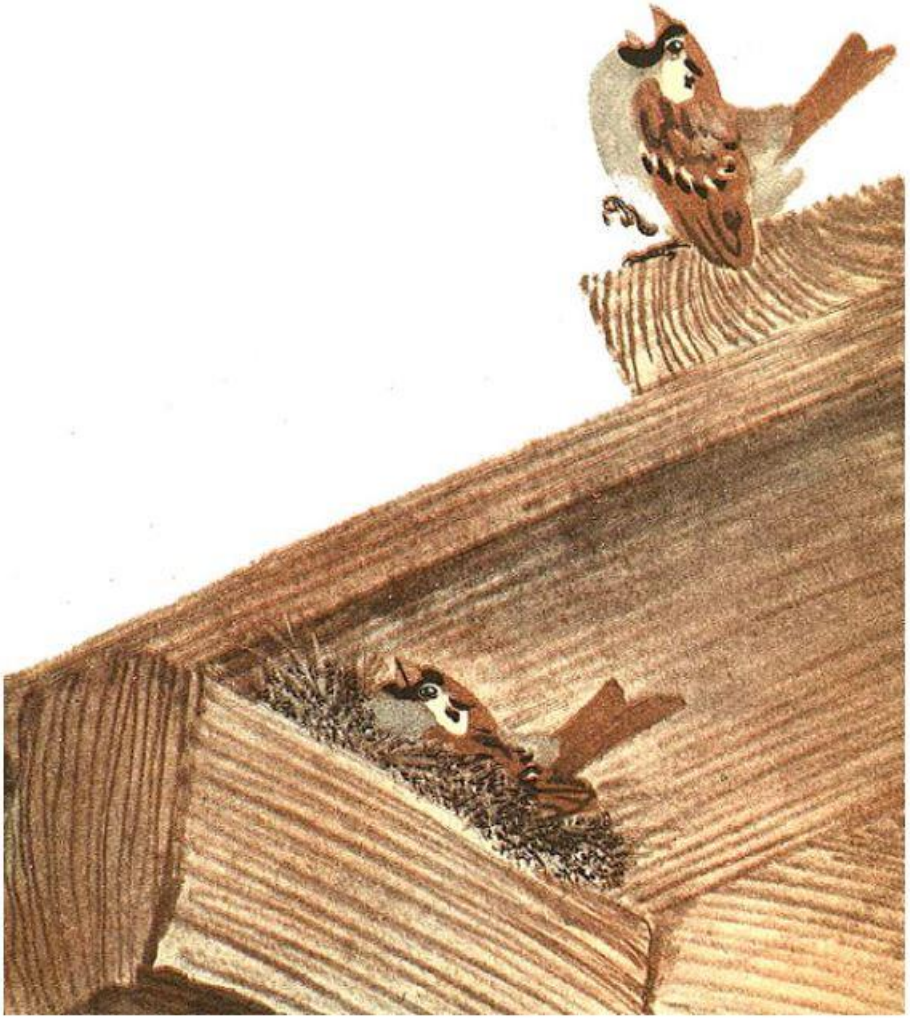

"ओह, चिरप, वहां बरामदे में उस भयानक राक्षस को तो देखो!" चिरपी ने भयभीत फुसफुसाहट में कहा. राक्षस एक मोटा बिल्ला था, और सच तो यह था कि वो बरामदे में सो रहा था.

"छोटी सी बात!" चिरप ने बहादुरी से कहा. "वो हमारा क्या नुकसान कर सकता है? देखो, मैं अभी उसे एक चोंच मारता हूं!" वो कूदा और सीधे राक्षस बिल्ले की ओर बढ़ा, इतनी लापरवाही से कि चिरपी घबराकर चिल्लाने लगी. चिरप ने बड़ी चतुराई से बिल्ले की नाक के ठीक नीचे से रोटी का एक टुकड़ा छीन लिया. बिल्ले ने जरा भी हलचल नहीं की, उसने केवल एक आंख खोली और चिड़चिड़ी गौरैया पर गौर से नजर डाली. "तुमने मुझे देखा? और तुम डर गए!" चिरप ने कहा.

उन्होंने छत के नीचे बड़ी दरार बनाने का फैसला किया. फिर वे तुरंत काम पर लग गए. वे पहले भूसे के टुकड़े लाए, फिर घोड़े के बाल, धागे और पंख लाए. फिर चिरपी ने अपना पहला अंडा दिया - एक सुंदर छोटा अंडा जो गुलाबी भूरे रंग के धब्बों से ढका हुआ था. चिरप इतना खुश हुआ कि उसने अपनी पत्नी और अपने लिए एक गाना बनाया. "ट्वीट-ट्वीट, चिरपी, चिरप! ट्वीट, ट्वीट, ट्वीट!"

शब्दों का कोई मतलब नहीं था, लेकिन जब कोई बाड़ पर चढ़ रहा होता तो उसे सुनाने के लिए वो एक अच्छा गाना था.

जब चिरपी के घोंसले में छह अंडे हुए, तो वो उन्हें सेने के लिए बैठ गई. चिरप अपनी पत्नी के लिए कीड़े और मक्खियाँ इकट्ठा करने के लिए उड़कर जाता था क्योंकि चिरपी को तब नरम और समृद्ध भोजन की आवश्यकता थी. ...

....जैसे ही उसने अपनी नाक को घोंसले के चीरे से बाहर निकाला, एक फैला हुआ पंजा उसकी ओर बढ़ा. खैर चिरपी ने पंजों में से पंखों का एक पूरा गुच्छा बचाकर खुद को आज़ाद कर लिया. वो एकदम बाल-बाल बची!

बिल्ली ने अपना पंजा दरार में डाला और पूरा घोंसला खींच लिया. व्यर्थ में चिरपी चिल्लाई, व्यर्थ में चिरप ने खुद को बिल्ली पर फेंका - लेकिन कोई भी उनकी मदद के लिए नहीं आया. बिल्ले ने शांतिपूर्वक सभी छह अंडे खा लिए.
फिर हवा ने खाली घोंसले को आसानी से उठाकर जमीन पर गिरा दिया.

उसी दिन चिरप और चिरपी ने उस खलिहान को हमेशा के लिए छोड़ दिया, और बिल्ली की पहुंच से दूर एक बगीचे में चले गए. यहां वे भाग्यशाली थे कि उन्हें एक खाली पेड़ में एक खोखला मिला, जिसमें उन्होंने एक नया घोंसला बनाने के लिए कड़ी मेहनत की.

उनके पड़ोसी फिंच, फ्लाईकैचर और गोल्डफिंच थे. वहां पर सभी के लिए भरपूर भोजन था. पर वहां भी चिरप अपने पड़ोसियों के साथ झगड़ा करता रहता था.

हालांकि, फिंच, चिरप से अधिक ताकतवर साबित हुई और उसने चिरप को एक अच्छा सबक सिखाया. चिरप को अब समझ में आया. वो अब फिर किसी से लड़ाई नहीं लड़ेगा. और जब कभी उसका कोई पड़ोसी वहां से गुजरता तो वो केवल अपने पंख फैलाता और कुछ चिल्लाता. इससे पड़ोसियों को गुस्सा नहीं आता था, क्योंकि उन्हें खुद दूसरे पक्षियों के सामने, अपनी ताकत और बहादुरी का बखान करना पसंद था.

...सबसे पहले फिंच ने अलार्म बजाया. हालांकि वो गौरैयों से सबसे दूर रहती थी. चिरप ने उसकी तेज़ चेतावनी भरी पुकार सुनी: रिअम-पिंक-पिंक! रिअम-पिंक-पिंक!

"चिरपी, जल्दी यहां आओ," चिरप चिल्लाया. "फिंच की चेतावनी सुनो - खतरा है!"

सचमुच, कोई भयावह व्यक्ति उन पर रेंग रहा था. अब गोल्डफिंच ने अलार्म दिया और उसके बाद फ्लाईकैचर ने. अगर फ्लाईकैचर उसे देख सकती थी तो दुश्मन ज़रूर काफी करीब होगा.

उन्होंने झाड़ियों में रोयेंदार बिल्ले की फर की झिलमिलाहट दिखी, जो उनका सबसे बड़ा दुश्मन था. फिर बिल्ला बाहर निकलकर आया. अचानक उसकी पूंछ का सिरा घास में हिलने लगा, उसकी आंखें फैल गईं. उसने अपने होंठ चाटे, पेड़ पर चढ़ गया और खोखले में पहुंच गया.

चिरप और चिरपी ने पूरे बगीचे में चीख-पुकार मचाई. फिर कोई भी उनकी मदद के लिए नहीं आया. उनके पड़ोसी डर के मारे जोर-जोर से चिल्लाते हुए अपने घोंसलों में ही दुबके रहे.

बिल्ले ने अपने पंजे घोंसले में डाले और उसे बाहर निकाला. लेकिन इस बार उसका पंजा बहुत जल्दी बाहर आ गया - क्योंकि चिरपी ने अभी तक कोई अंडे नहीं दिया था.

जब उसे कोई अंडा नहीं मिला तो उसने निराश होकर घोंसला नीचे जमीन पर फेंक दिए. जैसे ही वो चला गया, गौरैए उस पर चिल्लाने लगीं.

चिरप और चिरपी अपने नष्ट हुए घोंसले पर शोक मनाने लगे.

"चिरप, मुझे यकीन है कि मैं कुछ दिनों में अंडे दूंगी," चिरपी ने आख़िरकार कहा. "चलो जल्दी चलें और नदी के पार कहीं रहने के लिए कोई जगह ढूंढें. हम वहां पर बिल्ले से सुरक्षित रहेंगे."

वो नहीं जानती थी कि नदी पर एक पुल था और बिल्ला अक्सर उसका इस्तेमाल करता था. यह बात चिरप को भी पता नहीं थी.

"चलो चलें," उसने कहा. शीघ्र ही वे रेड हिल पर आ गये.

"आओ और हमारे साथ रहो!" अबाबीलों ने अपनी भाषा में गौरैयों को पुकारा. "हमारा बड़ा मिलनसार और भला समुदाय है!"

"तुम कह रही हो, लेकिन मुझे यकीन है कि तुम हमारे साथ जल्द ही लड़ाई शुरू करोगी," चिरप ने नाराज़गी से कहा.

"हमें भला क्यों लड़ेंगे?" अबाबील ने उत्तर दिया. "यहां हर हरेक के खाने के लिए पर्याप्त कीड़े हैं, और यहां रेड हिल पर घोंसले बनाने के लिए बहुत सारे खाली छेद हैं, बस तुम अपने लिए कोई चुन लो!"

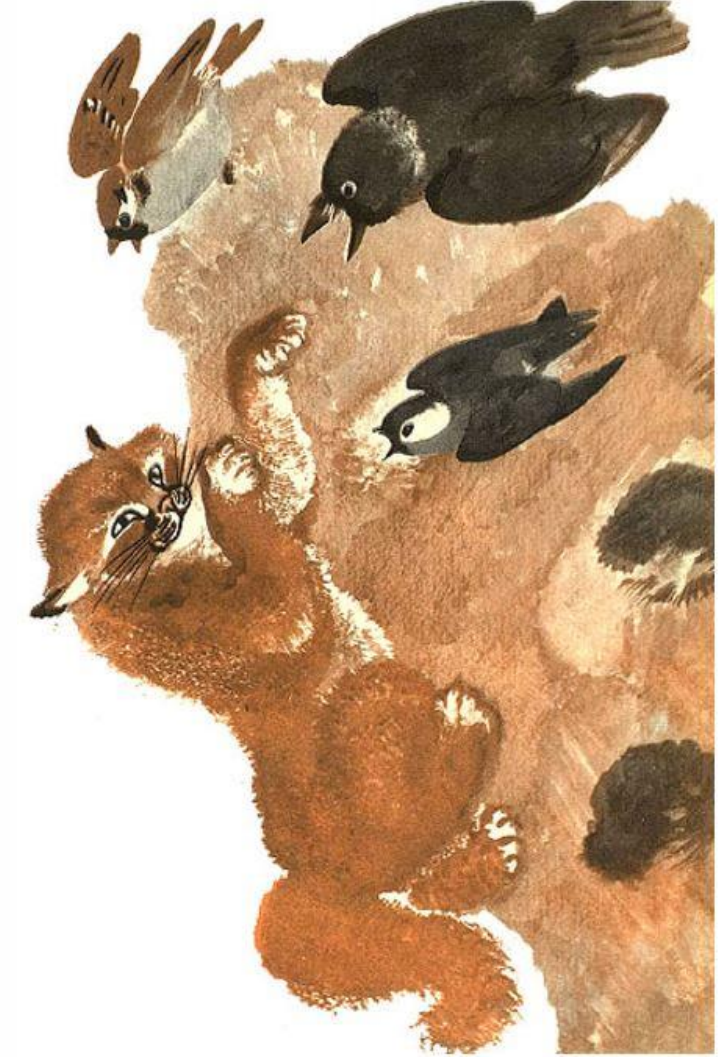

"और विंडहोवर्स के बारे में क्या? और मैगपाईज़?" चिरप ने पूछा.

"विंडहोवर, टिड्डियां और चूहे खाते हैं. वे हमें परेशान नहीं करते हैं. हम सभी अच्छे दोस्त हैं."

"हम कई जगह गए चिरप, लेकिन इससे अच्छी जगह हमने कभी नहीं देखी," चिरपी ने कहा. "चलो यहीं रुकते हैं."

"चलो ठीक है," चिरप ने हार मानते हुए कहा. "चलो इस जगह को भी आज़माकर देखते हैं."

वे खाली पड़े छेदों को देखने गए. उनमें से एक में उन्होंने घोंसला बनाया, जहां एक छेद में चिरपी को अपने अंडे सेने थे. और दूसरे छेद में रात को चिरप को सोना था.

अबाबील, मैगपाई और विंडहॉवर ने बहुत पहले ही अपने अंडों को सेना ख़त्म कर दिया था. चिरपी अकेले अपने अंधेरे घोंसले में अंडों को से रही थी. चिरप सुबह से रात तक उसके लिए खाने के लिए अच्छी-अच्छी चीज़ें लाने में व्यस्त था.

एक पखवाड़ा बीत गया. बिल्ला नहीं आया और गौरैए उसके बारे में सबकुछ भूल गईं. चिरप, चूज़ों के निकलने का इंतजार नहीं कर सका. जब भी वो चिरपी के लिए कोई कीड़ा या मक्खी लाता तो वो पूछता,

"क्या अभी तक अंडों ने दस्तक नहीं दी?"

"अभी तक नहीं."

"क्या बहुत लंबा समय लगेगा?"

"नहीं, बस थोड़ी देर और," चिरपी ने धैर्यपूर्वक उत्तर दिया.

और फिर, एक सुबह, चिरपी ने घोंसले से उसे आवाज़ दी, "जल्दी आओ! एक अंडे ने दस्तक दी है!"

चिरप उड़ता हुआ आया. एक चूज़ा अपनी कमज़ोर छोटी चोंच से खोल को खटखटा रहा था. आवाज़ धीमी थी लेकिन उसने उसे सुन लिया. चिरपी ने अपने चूजे की मदद के लिए खोल को कई जगहों से तोड़ दिया.

कुछ ही मिनटों में उसे अंडे में से एक छोटा, अंधा, उखड़े पंखों वाला चूजा दिखा, जिसका बड़ा सिर, एक पतली गर्दन पर लहरा रहा था.

"क्या वो मजाकिया नहीं लग रहा है!" चिरप बोला.

"वो बिल्कुल ठीक है," चिरपी ने भावुकता से कहा. "वो बहुत सुंदर बच्चा है. अब जितने हो सकें उतने अंडों के छिलकों को तोड़ो." जब तक चिरप वापस आया, तब तक एक दूसरा चूजा निकल आया था.

यह वही क्षण था जब रेड हिल में दहशत फैल गई. अपने घोंसले से उन्हें अबाबील की तीव्र चीखें सुनाई दीं.

चिरप बाहर कूद गया और तुरंत यह भयानक खबर लेकर लौटा कि बिल्ला आ रहा था. चिरप रोया. "हमें पता चलने से पहले ही वो यहां आ गया, और अब वो हमें और हमारे चूजों को खा जायेगा. जल्दी करो, चलो यहां से उड़ चलें!"

"मैं नहीं जाऊंगी," चिरपी ने उदास होकर उत्तर दिया. जो होना होगा, होगा."

उसने चिरप की पुकारों का कोई जवाब नहीं दिया और वो वहां से हिली तक नहीं. चिरप ने पागलों की तरह दुश्मन पर हमला किया. लेकिन बिल्ला फिर भी हाथ-पैर मारता रहा. अबाबीलें गुस्से में उसके ऊपर ही चक्कर लगा रही थीं, मैगपाई और विंडहॉवर भी उनके साथ शामिल हो गईं, लेकिन बिल्ले ने तेजी से बढ़त बनाई और गौरैया के घोंसले को पकड़ लिया.

अब बिल्ले को बस अपने दूसरे पंजे से जोर लगाना था और फिर चिरपी,चूजों और अंडों को घोंसले से बाहर निकालना था.

पर तभी विंडहोवर में से एक ने, बिल्ले की पूंछ पर अपनी चोंच मारी और दूसरे ने उसके सिर पर ज़ोर से चोंच मारी, जबकि दो मैगपाई ने उसकी पीठ पर वार किया. बिल्ला दर्द से कराहने लगा, वो अपने अगले पंजों से पक्षियों को पकड़ने के लिए इधर-उधर घूमा, लेकिन वे उड़ गए और फिर बिल्ला नीचे गिर गया. उसके पास अब पकड़ने के लिए कुछ भी नहीं था.

खड़ी पहाड़ी से नीचे उड़ती लाल धूल के बादल में, पक्षी भागते बिल्ले नहीं देख सके. प्लॉप! फिर उन्होंने बिल्ले के गीले सिर को नदी के बीच में उछलते हुए देखा, और चिरप उसके पीछे मंडरा रहा था और उसे चोंच मार रहा था.

बिल्ला तैरकर विपरीत किनारे पर पहुंच गया और बाहर निकल आया. चिरप फिर भी उसे अकेला नहीं छोड़ रहा था. बिल्ला इतना डर गया था कि उसने गौरैया पर झपटने की हिम्मत तक नहीं की और अपनी गीली पूंछ बाहर निकालकर सरपट घर की ओर भागा.

बिल्ला फिर कभी रेड हिल पर दिखाई नहीं दिया.